



SHRI KARMA WANGCHU (POSTHUMOUS)

Shri Karma Wangchu the former Health, Transport and Cooperation Minister and the first Minister from Tawang district, Arunachal Pradesh Government, in the Cabinet headed by then Chief Minister Lt. Shri Tomo Riba is known for his services to the people of Arunachal Pradesh.

2. Born on 27th September 1935 at Seru village, Tawang, Arunachal Pradesh, Shri Wangchu didn't receive formal education but started his career from NEFA Police in the year 1959-60 and thereon served as Junior Intelligence Officer-II in the Subsidiary Intelligence Bureau (SIB) from 1960 to 1976. During his service tenure, he was awarded a Certificate and cash award for his distinguished and meritorious service during the 1962 Indo-Sino War. He was also a recipient of the Silver Medal for meritorious service in 1972. He was appointed as the first Gaon Burah (Village Head Man) of Seru Tso village by Government of Arunachal Pradesh.

3. Shri Wangchu at the age of 16, undertook a trip to Lhasa on foot and had an audience with His Holiness, the 14th Dalai Lama at Potala Palace. The mutual bonding continued and was further cemented by the gracious visit of His Holiness, the 14th Dalai Lama to his residence at Tawang twice in the years 1997 and 2003. He was the founder of the Indo-Tibet Friendship Society, Arunachal Pradesh. He tried to bring the Tibetan community of Arunachal Pradesh closely to bonafide locals so that it could prevent Chinese influence over Tibetan communities on our side. He always tried to make the people of Indo Tibet Border more patriotic towards our motherland India.

4. Shri Wangchu, as a representative of the public from 1978-1994, worked tirelessly towards preservation and the promotion of the rich cultural heritage in the border areas of the State and diligently served the people at the grass root level. He was a pioneer in taking the Government policies and development schemes to the remotest corner and border areas of Tawang District. He served as Pro-Tem Speaker of the Legislative Assembly. In his long political career, owing to the love of his people, he has not lost any elections. He gracefully retired from active politics in 1994.

5. Shri Wangchu believed Education was the catalyst of economic growth and other developmental/social works so, after retirement from active politics, he continued his service towards the society especially in the field of education by starting the Choephelling Public School for the destitute and orphans. As part of his philanthropic contribution, he provided free education along with residential facilities to more than 1256 children, mostly orphans, destitute and children belonging to very poor families of the border villages like Mago, Thingbu, Zemithang of Tawang District. A devout follower of His Holiness the 14th Dalai Lama and an ardent advocate of his teachings of Compassion, he till his demise was actively involved in Humanitarian activities and took out time to work tirelessly towards the preservation of the rich Monpa culture and traditions of Tawang.

6. Shri Wangchu passed away on 20th October, 2022.



श्री करमा वांगचु (मरणोपरांत)

श्री करमा वांगचु, पूर्व स्वास्थ्य, परिवहन और सहकारिता मंत्री और, तत्कालीन मुख्यमंत्री स्व. श्री तोमो रिबा के नेतृत्व वाली अरुणाचल प्रदेश सरकार के मंत्रिमंडल में तवांग जिले से पहले मंत्री थे, जिन्हें अरुणाचल प्रदेश की जनता के प्रति अपनी उत्कृष्ट सेवा के लिए जाना जाता है ।

2. 27 सितंबर 1935 को सेरु गांव, तवांग, अरुणाचल प्रदेश में जन्मे, श्री वांगचु ने औपचारिक शिक्षा प्राप्त नहीं की, लेकिन वर्ष 1959-60 में नेफा पुलिस से अपना करियर शुरू किया और उसके बाद सहायक खुफिया ब्यूरो (एसआईबी) में 1960 से 1976 तक जूनियर इंटेलिजेंस ऑफिसर-II के रूप में कार्य किया। अपने कार्यकाल के दौरान, उन्हें 1962 के भारत-चीन युद्ध के दौरान उनकी विशिष्ट और सराहनीय सेवा के लिए प्रमाण पत्र और नकद पुरस्कार से सम्मानित किया गया। उन्हें 1972 में सराहनीय सेवा के लिए रजत पदक से भी सम्मानित किया गया था। उन्हें अरुणाचल प्रदेश सरकार द्वारा सेरु त्सो गाँव के पहले गाँव बूढ़ा (ग्राम प्रधान) के रूप में नियुक्त किया गया था।

3. श्री वांगचु ने 16 वर्ष की आयु में पैदल ल्हासा की यात्रा की और पोताला महल में परम पूज्य 14वें दलाई लामा से भेंट की। दोनों के बीच परस्पर संबंध प्रगाढ़ होते चले गए और और तवांग स्थित उनके आवास पर 1997 और 2003 में परम पूज्य 14वें दलाई लामा के दो बार आगमन से यह संबंध और अधिक घनिष्ठ हो गया। वह इंडो-तिब्बत फ्रेंडशिप सोसाइटी, अरुणाचल प्रदेश के संस्थापक थे। उन्होंने अरुणाचल प्रदेश के तिब्बती समुदाय को स्थानीय मूल निवासियों के समीप लाने की कोशिश की ताकि इससे हमारी ओर के तिब्बती समुदायों पर चीनी प्रभाव रोका जा सके। उन्होंने हमेशा भारत तिब्बत सीमा के लोगों को हमारी मातृभूमि भारत के प्रति अधिक देशभक्त बनाने की कोशिश की।

4. श्री वांगचु ने 1978-1994 तक, जनता के प्रतिनिधि के रूप में, राज्य के सीमावर्ती क्षेत्रों में समृद्ध सांस्कृतिक विरासत के संरक्षण और संवर्धन के लिए अथक प्रयास किए और जमीनी स्तर पर लोगों की सेवा की। उन्होंने सरकार की नीतियों और विकास योजनाओं को तवांग जिले के दूरस्थ स्थानों और सीमावर्ती क्षेत्रों तक ले जाने में अग्रणी भूमिका निभाई। उन्होंने विधान सभा के अस्थायी अध्यक्ष के रूप में भी कार्य किया। अपने लंबे राजनीतिक जीवन में जनता के प्यार की वजह से वह एक भी चुनाव नहीं हारे। उन्होंने 1994 में सक्रिय राजनीति से सम्मानपूर्वक संन्यास ले लिया।

5. श्री वांगचु का मानना था कि शिक्षा, आर्थिक विकास और अन्य विकास/सामाजिक कार्यों की उत्प्रेरक है, इसलिए सक्रिय राजनीति से सेवानिवृत्ति के बाद, उन्होंने निराश्रित और अनाथ बच्चों के लिए चोफेलिंग पब्लिक स्कूल शुरू करके समाज विशेष रूप से शिक्षा के क्षेत्र में अपनी विशिष्ट सेवा जारी रखी। अपने परोपकारी योगदान के हिस्से के रूप में, उन्होंने 1256 से अधिक बच्चों को आवासीय सुविधाओं के साथ मुफ्त शिक्षा प्रदान की, जिनमें ज्यादातर अनाथ, निराश्रित और तवांग जिले के मागो, थिंग्बू, जेमिथांग जैसे सीमावर्ती गांवों के अत्यंत गरीब परिवारों के बच्चे थे। वह परम पूज्य 14वें दलाई लामा के सच्चे अनुयायी और करुणा की उनकी शिक्षाओं के प्रबल समर्थक थे और जीवनपर्यंत मानवतावादी गतिविधियों में सक्रिय रूप से शामिल रहे तथा उन्होंने तवांग की समृद्ध मोनपा संस्कृति और परंपराओं के संरक्षण के लिए अथक प्रयास किए।

6. श्री वांगचु का 20 अक्टूबर, 2022 को देहावसान हो गया।